[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3668

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंगीन क्रांतियाँ एवं भारतीय अर्थव्यवस्था

डॉ. अंजना सक्सेना
प्राध्यापक अर्थषास्त्र विभाग
शा. महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, किला भवन, इंदौर

रंग न केवल भावों की अभिव्यक्ति करते हैं वरन् वे अर्थव्यवस्था में विकास के प्रतीक भी हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। रंगहीन अर्थव्यवस्था में रंगीन क्रांतियों ने रंग भरकर उसका सौंदर्य निखारने (विकसित करने) का कार्य किया है। हरा, पीला, नीला, सुनहरा, सफेद, गुलाबी आदि कई रंगों से सजी भारतीय अर्थव्यवस्था अपने इंद्रधनुषी रंग चारों ओर बिखेर रही है। इतिहास साक्षी है कि क्रांतियाँ एक विराट संकल्प लेकर चलती हैं और उसके साथ यदि प्रयास दृढ़ हो तो वे निष्चित रूप से सफल होती है। विभिन्न वस्तुओं से संबंधित प्रतीकात्मक रंग एक संकल्प के साथ जुड़कर रंगीन क्रांतियों के रूप में प्रकट हुये।

हरित क्रांति – 1960 के दषक में कृषि उत्पादन बढ़ाने हेतु जो अध्ययन, अनुसंधान एवं प्रयत्न किये गये, उन्हें हरित क्रांति का नाम दिया गया। उन्नत किस्म के बीज, रासायनिक उर्वरक एवं सिंचाई के साधनों की व्यवस्था तथा नवीन तकनीक ने भारत में कृषि उत्पादन तेजी से बढ़ाया। प्रो. एम.एस. स्वामीनाथन एवं प्रो. नार्मन बोरलाग ने हरित क्रांति के माध्यम से लाखों लोगों को अकाल एवं भूख से बचाया। खुषहाली और समृद्धि के प्रतीक हरे रंग ने भारत में चंहुओर खुषियाँ बिखेर दी।

श्वेत क्रांति – 1970 में नेषनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड (NDDB) ने "ऑपरेषन फ्लड" के नाम से एक परियोजना प्रारंभ की जिसे "श्वेत क्रांति" के नाम से भी जाना जाता है। यह विष्व का सबसे बड़ा दुग्ध विकास कार्यक्रम था जिसने भारत को न केवल आत्मनिर्भर बनाया बल्कि दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देष बना दिया। प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता बढ़ाने के अतिरिक्त श्वेत क्रांति ने अनेकों लोगों के लिये रोजगार के अवसर भी उत्पन्न किये। शांति के प्रतीक श्वेत रंग ने भारत में दूध की नदियाँ बहा दीं।

नीली क्रांति – नीली क्रांति का संबंध मछलियों, समुद्री जीव–जंतुओं एवं वनस्पतियों के उत्पादन से है। 1970 में तत्कालीन केन्द्रीय सरकार ने Fish Farmers Development Agency (FFDA) का गठन किया जिसने नीली क्रांति को जन्म दिया। परिणामस्वरूप भारत में मछली प्रजनन, उत्पादन, विपणन एवं निर्यात में तेजी से वृद्धि हुई। नीली क्रांति का उद्देष्य भारत वासियों को भोजन एवं पोषक तत्व उपलब्ध कराना, पर्यावरण संरक्षण तो था ही लेकिन इससे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लाखों लोगों को रोजगार भी मिला और सकल राष्ट्रीय उत्पाद में भी वृद्धि हुई।

पीली क्रांति – नई किस्मों एवं आवष्यक उन्नत तकनीक के विकास ने तिलहनों के उत्पादन में 1987–88 की तुलना में 1996–97 में आष्चर्य जनक रूप से तेजी से वृद्धि हुई, इस क्रांतिकारी परिवर्तन को नाम दिया गया पीली क्रांति। इस क्रांति की मुख्य देन थी सोयाबीन एवं सूर्यमुखी जो प्रमुख तिलहन के रूप में सामने आये। सोयाबीन बहुउपयोगी सिद्ध हुआ, तिलहन उत्पादन क्षैत्र का विकास हुआ। सरकार की कीमत समर्थन नीति ने इस रंग को ओर गहरा रंग दिया।

सुनहरी रेषा क्रांति – जूट के एक प्राकृतिक सुनहरा रेषा है जो भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत विष्व का प्रमुख जूट उत्पादक है। विष्व के कुल जुट उत्पादक का लगभग 85% भारत में होता है। पुनरूत्पादनीय होने के कारण पर्यावरणीय दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। जूट की पत्तियों को प्रयोग भोजन के रूप में भी किया जाता है। कपड़े, भोजन पेकिंग व अन्य कई उपयोग होने के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था में इस क्रांतिकारी उद्योग का भविष्य सुनहरा है।

काली क्रांति – काली क्रांति का संबंध पेट्रोलियम एवं उससे संबंधित उद्योगों से है। किसी भी अर्थव्यवस्था का अधारभूत साधन पेट्रोलियम उद्योग होता है। भूगर्भ से प्राप्त कच्चे तेल का शोधन करने के बाद विभिन्न उत्पाद तैयार किये जाते है जो कृषि, उद्योग एवं यातायात का आधार बनते है। पेट्रोलियम पर आधारित पेट्रोरसायन उद्योग ने भारतीय अर्थव्यवस्था का रंग ही बदल दिया है। 1990 के दषक से इस उद्योग ने क्रांतिकारी रूप से अपना विस्तार किया है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

भूरी क्रांति – तेजी से बढ़ते चमड़ा उद्योग के विकास को भूरी क्रांति कहा जाता है। जूता उद्योग, फैषन जगत, फर्नीचर उद्योग में चमड़े की भारी मांग ने इस क्रांति को सफल बनाया है। भारत की अर्थव्यवस्था में उत्पादन एवं निर्यात के दृष्टिगत इस बड़े उद्योग की श्रेणी में गिना जाने लगा है। वर्ष 2013–14 में भारत में चमड़े का रिकॉर्ड उत्पादन किया गया।

गुलाबी क्रांति – भारत विष्व का दूसरा बड़ा प्याज उत्पादक देष है। भारत के प्याज की विष्व में बहुत मांग है। भारत में प्याज का उपयोग एवं उत्पादन वर्ष भर किया जाता है। पूरे भारत में जगह–जगह पर प्याज उत्पादन किया जाता है। वर्ष 2013–14 में 3169.63 करोड़ रू. का प्याज निर्यात किया गया। इसे देखते हुये यह कहना गलत नहीं होगा कि भारत में गुलाबी क्रांति आ गई है।

विभिन्न रंगों से सजी अर्थव्यस्था के रंग संयोजन में यदि संतुलन बना रहे तो निष्चित ही अर्थव्यवस्था प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकेगी।

संदर्भ –

1 *भारतीय अर्थव्यवस्था – "दत्त एवं सुंदरम् (एस. चंद एंड कं.) रामनगर, नई दिल्ली*
2 *The Hindu Business Line & Monday Oct. 01, 2001*